

## दिनकर के काव्य में इतिहास, पुराण और पौराणिक प्रतीकों का प्रयोग

प्रांजल कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

पूर्णिमा विश्वविद्यालय, पूर्णिमा

### प्रस्तावना

रामधारी सिंह "दिनकर" हिंदी साहित्य के उन रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति, इतिहास और पुराणों की गहरी छाप छोड़ी। उनकी कविताएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागृति का आह्वान हैं। दिनकर ने इतिहास और पुराणों को अपनी रचनाओं का आधार बनाकर भारतीय समाज को उसकी गौरवशाली विरासत से जोड़ा, साथ ही समकालीन चुनौतियों के लिए प्रेरणा दी। उनके काव्य में पौराणिक प्रतीकों का उपयोग न केवल सौंदर्यबोधक है, बल्कि गहन दार्शनिक और सामाजिक संदेशों को भी व्यक्त करता है। दिनकर की रचनाएँ, जैसे कुरुक्षेत्र और रश्मिर्थी, महाभारत जैसे पौराणिक कथानकों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं। वे इतिहास को केवल अतीत की घटनाओं तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे मानव जीवन के नैतिक और सामाजिक प्रश्नों से जोड़ते हैं। उनकी कविताओं में सूर्य, गंगा और हिमालय जैसे प्रतीक भारतीय संस्कृति की निरंतरता और शक्ति को दर्शाते हैं। खासकर स्वतंत्रता संग्राम के दौर में, दिनकर ने इन प्रतीकों के माध्यम से जनमानस में देशभक्ति और आत्मबल जागृत किया।

उनके काव्य में पौराणिक पात्र, जैसे कर्ण और अर्जुन, मानवीय भावनाओं और नैतिक द्वंद्व के प्रतीक बनकर उभरते हैं। कर्ण का चरित्र सामाजिक असमानता और व्यक्तिगत बलिदान को दर्शाता है, जो पाठकों को गहरे चिंतन के लिए प्रेरित करता है। दिनकर का काव्य इतिहास और पुराणों को समकालीन भारत के संदर्भ में इसे कालजयी प्रासंगिक बनाता है। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज को उसकी जड़ों से जोड़ने के साथ-साथ आधुनिक चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती हैं। इस लेख में हम दिनकर के काव्य में इतिहास, पुराण और पौराणिक प्रतीकों के उपयोग का विश्लेषण करेंगे, जो उनकी रचनाओं को हिंदी साहित्य में अमर बनाता है।

**बीज शब्द :-** कालजयी, ऐतिहासिक, पौराणिक, आधुनिक, आध्यात्मिकता, प्रज्वलित, जनमानस।

### काव्य में इतिहास का उपयोग

रामधारी सिंह "दिनकर" की रचनाएँ भारतीय इतिहास के गौरवशाली पन्नों को जीवंत करती हैं। उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक जागृति का सशक्त माध्यम भी हैं। दिनकर ने इतिहास को केवल घटनाओं का संकलन नहीं माना, बल्कि उसे मानव मूल्यों, संघर्ष और नैतिकता के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी प्रमुख कृतियों, जैसे कुरुक्षेत्र और रश्मिर्थी, में महाभारत काल के ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंगों का उपयोग हुआ है, जो समकालीन भारत के लिए प्रासंगिक संदेश देते हैं। नीचे उनके काव्य में इतिहास के उपयोग को दो प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है :-

**कुरुक्षेत्र :** दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र महाभारत के युद्ध को आधार बनाकर लिखी गई एक दार्शनिक रचना है, जो इतिहास को मानव जीवन के गहन प्रश्नों से जोड़ती है। इस काव्य में दिनकर ने कुरुक्षेत्र के युद्ध को केवल एक ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि धर्म, अधर्म, युद्ध और शांति के बीच के नैतिक द्वंद्व के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। यह रचना युधिष्ठिर और भीष्म के संवादों के माध्यम से युद्ध की अनिवार्यता और इसके परिणामों पर विचार करती है। दिनकर ने इस ऐतिहासिक प्रसंग को स्वतंत्रता संग्राम के दौर के भारत से जोड़ा, जहाँ उन्होंने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष को नैतिक और राष्ट्रीय

जागरण के रूप में चित्रित किया। कुरुक्षेत्र में इतिहास का उपयोग केवल अतीत को याद करने के लिए नहीं, बल्कि वर्तमान को प्रेरित करने और भविष्य के लिए दिशा प्रदान करने के लिए किया गया है। दिनकर की यह रचना पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि युद्ध और शांति के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। उनके काव्य में ऐतिहासिक घटनाएँ मानवता के सामने आने वाली शाश्वत चुनौतियों को दर्शाती हैं, जो उनकी रचनाओं को कालजयी बनाती हैं। दिनकर का यह दृष्टिकोण इतिहास को जीवंत और प्रासंगिक बनाता है, जो आधुनिक समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

**हिमालय और गंगा :** दिनकर की कविताओं में हिमालय और गंगा भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रतीक के रूप में उभरते हैं। उनकी रचनाओं में ये भौगोलिक तत्व केवल प्राकृतिक सौंदर्य का हिस्सा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के प्रतीक हैं। दिनकर ने हिमालय को भारत की शक्ति, स्थिरता और गौरव का प्रतीक बनाया, जो इतिहास के विभिन्न कालखंडों में देश की रक्षा करता रहा है। गंगा को उन्होंने पवित्रता, निरंतरता और सभ्यता की धारा के रूप में चित्रित किया। उनकी कविताएँ, जैसे हिमालय और गंगा, ऐतिहासिक चेतना को राष्ट्रीय गौरव के साथ जोड़ती हैं। दिनकर ने इन प्रतीकों के माध्यम से भारत के गौरवशाली अतीत को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया, खासकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जब देश को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से प्रेरणा की आवश्यकता थी। हिमालय और गंगा का उपयोग उनकी कविताओं में राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करता है। यह ऐतिहासिक तत्व पाठकों को यह याद दिलाते हैं कि भारत की सभ्यता कितनी प्राचीन और समृद्ध है। दिनकर का यह काव्य दृष्टिकोण इतिहास को केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाता है। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के प्रति गर्व का अनुभव कराती हैं, जो आज भी प्रासंगिक है।

### काव्य में पुराणों का प्रभाव

रामधारी सिंह "दिनकर" के काव्य में पुराणों का प्रभाव उनकी रचनाओं को गहन भावनात्मक और दार्शनिक आयाम प्रदान करता है। पुराणों की कहानियाँ और पात्र उनके काव्य में केवल कथानक नहीं, बल्कि नैतिकता, धर्म और मानव जीवन के संघर्षों के प्रतीक के रूप में उभरते हैं। दिनकर ने पुराणों को भारतीय संस्कृति की आत्मा के रूप में देखा और उन्हें आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत कर समकालीन समाज को प्रेरित किया। उनकी रचनाएँ पुराणों की कथाओं को मानव जीवन के शाश्वत प्रश्नों से जोड़ती हैं, जिससे वे कालजयी और प्रासंगिक बनती हैं। नीचे उनके काव्य में पुराणों के प्रभाव को दो प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है :-

**रश्मिरथी :** दिनकर की कृति रश्मिरथी महाभारत के पात्र कर्ण के जीवन पर आधारित है, जो पुराणों की गहराई को मानवीय संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत करती है। इस काव्य में कर्ण का चरित्र सामाजिक असमानता, व्यक्तिगत बलिदान और नैतिक संघर्ष का प्रतीक बनता है। दिनकर ने कर्ण की कहानी को पुराणों के कथानक से उठाकर उसे आधुनिक दृष्टिकोण से चित्रित किया, जिससे यह सामान्य जनमानस के लिए प्रासंगिक हो गई। कर्ण का जीवन, जो सामाजिक तिरस्कार और अपनी पहचान के लिए संघर्ष से भरा है, पुराणों की उस शक्ति को दर्शाता है जो मानव जीवन के गहरे सवालों को उजागर करती है। दिनकर ने कर्ण के माध्यम से यह दिखाया कि पुराणों की कहानियाँ केवल धार्मिक कथाएँ नहीं, बल्कि मानवता के सामने आने वाली चुनौतियों का दर्पण हैं। रश्मिरथी में पुराणों का प्रभाव कर्ण के चरित्र की जटिलता और उसके नैतिक द्वंद्व में स्पष्ट है, जो पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि सही और गलत का निर्णय कितना जटिल हो सकता है। दिनकर का यह काव्य पुराणों को केवल अतीत की कहानियों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें आधुनिक समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाता है। यह रचना पुराणों की शक्ति को जीवंत करती है, जो मानव जीवन के संघर्ष और आदर्शों को समझने में सहायता करती है।

**पौराणिक नैतिकता :** दिनकर के काव्य में पुराणों का उपयोग नैतिकता और धर्म के प्रश्नों को उजागर करने के लिए किया गया है। वे पुराणों को केवल धार्मिक कथाओं के रूप में नहीं देखते, बल्कि उन्हें मानव जीवन के नैतिक और दार्शनिक आयामों को समझने का माध्यम मानते हैं। उनकी रचनाओं में धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य के बीच का द्वंद्व बार-बार उभरता है। उदाहरण के लिए, कुरुक्षेत्र में युधिष्ठिर और भीष्म के संवादों के माध्यम से दिनकर ने युद्ध और शांति के नैतिक प्रश्नों को पुराणों के संदर्भ में प्रस्तुत किया। यहाँ पुराणों की नैतिकता मानव जीवन के सामने आने वाली दुविधाओं को दर्शाती है। दिनकर ने पुराणों के पात्रों और कथाओं को इस तरह प्रस्तुत किया कि वे आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक हो जाएँ। उनकी कविताएँ पाठकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि नैतिकता और धर्म का असली अर्थ क्या है। पुराणों की कहानियाँ उनके काव्य में मानवता के सामने आने वाले शाश्वत सवालों को उजागर करती हैं, जैसे कि कर्तव्य, बलिदान और सत्य की खोज। दिनकर का यह दृष्टिकोण पुराणों को केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें सामाजिक और नैतिक चेतना का स्रोत बनाता है। उनकी रचनाएँ पाठकों को यह याद दिलाती हैं कि पुराणों की शिक्षाएँ आज भी हमारे जीवन को दिशा दे सकती हैं, जिससे उनकी कविताएँ कालजयी और प्रेरणादायक बनती हैं।

### पौराणिक प्रतीकों का उपयोग

रामधारी सिंह “दिनकर” ने अपनी कविताओं में पौराणिक प्रतीकों का उपयोग कर गहरी भावनात्मक और बौद्धिक अपील पैदा की। ये प्रतीक उनकी रचनाओं को भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ों से जोड़ते हैं, साथ ही उन्हें आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाते हैं। दिनकर ने प्रतीकों को केवल सजावटी तत्वों के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, मानवीय भावनाओं और नैतिक मूल्यों को व्यक्त करने के सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया। उनकी कविताएँ पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से भारतीय समाज को उसकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती हैं और समकालीन चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती हैं। नीचे उनके काव्य में पौराणिक प्रतीकों के उपयोग को तीन प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से विश्लेषित किया गया है :-

**सूर्य और अग्नि :** दिनकर की कविताओं में सूर्य और अग्नि शक्ति, ऊर्जा और क्रांति के प्रबल प्रतीक हैं। सूर्य को भारतीय संस्कृति में ज्ञान, जीवन और तेज का प्रतीक माना जाता है, और दिनकर ने इसे राष्ट्रीय जागरण और आत्मबल के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ, जैसे उर्वशी और हुंकार, में सूर्य का प्रतीक न केवल व्यक्तिगत प्रेरणा, बल्कि सामूहिक उत्साह और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का प्रतीक बनता है। अग्नि, जो परिवर्तन और शुद्धिकरण का प्रतीक है, दिनकर के काव्य में क्रांतिकारी भावना को दर्शाती है। खासकर स्वतंत्रता-संग्राम के दौर में, अग्नि का प्रतीक औपनिवेशिक शासन के खिलाफ विद्रोह की ज्वाला को प्रज्वलित करता है। दिनकर ने इन प्रतीकों को इस तरह बुना कि वे पाठकों के मन में उत्साह और जोश भर दें। सूर्य और अग्नि का उपयोग उनकी कविताओं को गतिशील और प्रेरणादायक बनाता है, जो भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ों से जुड़कर आधुनिक भारत के लिए प्रासंगिक हो जाता है। ये प्रतीक पाठकों को यह याद दिलाते हैं कि साहस और ऊर्जा ही प्रगति का आधार हैं, जिससे दिनकर का काव्य कालजयी बनता है।

**गंगा और हिमालय :** दिनकर की कविताओं में गंगा और हिमालय भारतीय संस्कृति और सभ्यता की निरंतरता के प्रतीक हैं। हिमालय को उन्होंने भारत की शक्ति, स्थिरता और आध्यात्मिक गहराई का प्रतीक बनाया, जो देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को दर्शाता है। उनकी कविताएँ, जैसे हिमालय, इसे राष्ट्रीय गौरव और अटलता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। गंगा, जो पवित्रता और जीवन की धारा का प्रतीक है, दिनकर के काव्य में भारत की सभ्यता की अनवरत यात्रा को व्यक्त करती है। उनकी रचनाओं में गंगा और हिमालय केवल भौगोलिक तत्व नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा के प्रतीक हैं। स्वतंत्रता संग्राम के समय, इन प्रतीकों ने जनमानस को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिनकर ने इन प्रतीकों के माध्यम से भारत के गौरवशाली अतीत को समकालीन संदर्भ में जीवंत किया, जिससे पाठकों

में गर्व और प्रेरणा का संचार हुआ। गंगा और हिमालय का उपयोग उनकी कविताओं को एक गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गहराई देता है, जो उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाता है।

**कर्ण और अर्जुन :** दिनकर के काव्य में कर्ण और अर्जुन जैसे पौराणिक पात्र मानवीय भावनाओं और नैतिक द्वंद्व के प्रतीक के रूप में उभरते हैं। रश्मिस्थी में कर्ण का चरित्र सामाजिक असमानता, व्यक्तिगत बलिदान और आत्मसम्मान के संघर्ष का प्रतीक है। दिनकर ने कर्ण को एक ऐसे नायक के रूप में प्रस्तुत किया, जो अपनी नियति से लड़ता है, फिर भी सम्मान और सत्य के लिए डटकर मुकाबला करता है। दूसरी ओर, अर्जुन धर्म और कर्तव्य के प्रतीक हैं, जो कुरुक्षेत्र में नैतिक दुविधाओं से जूझते हैं। दिनकर ने इन पात्रों के माध्यम से मानव जीवन के शाश्वत प्रश्नों को उठाया, जैसे कि सही और गलत का निर्णय कैसे लिया जाए। कर्ण और अर्जुन का उपयोग उनकी कविताओं को गहरी मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक गहराई देता है। ये प्रतीक पाठकों को यह सोचने के लिए गहरी मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधार प्रदान करता है। दिनकर का यह दृष्टिकोण पौराणिक पात्रों को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है, जिससे उनकी रचनाएँ कालजयी और प्रेरणादायक बनती हैं।

### **समकालीन प्रासंगिकता**

रामधारी सिंह “दिनकर” का काव्य केवल साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा को झकझोरने वाला एक आह्वान है। उनकी रचनाएँ इतिहास, पुराण और पौराणिक प्रतीकों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत कर समकालीन भारत की चुनौतियों से जोड़ती हैं। दिनकर ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरणा दी, जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उनका काव्य भारतीय संस्कृति की जड़ों को मजबूत करता है और साथ ही आधुनिक समाज को दिशा दिखाता है। उनकी रचनाएँ समय की सीमाओं को तोड़कर हर युग में प्रेरणा का स्रोत बनी रहती हैं।

दिनकर की कविताएँ, जैसे सिंहासन खाली करो कि जनता आती है, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनमानस में क्रांतिकारी भावना जगाने का सशक्त माध्यम बनीं। यह कविता औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनता की आवाज को बुलंद करती है, जो आज भी लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की मांग को प्रतिबिंबित करती है। दिनकर ने इतिहास और पौराणिक प्रतीकों, जैसे सूर्य, गंगा और हिमालय, का उपयोग कर भारत की सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बनाया। रश्मिस्थी में कर्ण का चरित्र सामाजिक असमानता और व्यक्तिगत संघर्ष को दर्शाता है, जो आज के समय में भी जातिगत और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई को प्रासंगिक बनाता है।

दिनकर का काव्य आधुनिक भारत के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जहाँ सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता और नैतिकता के प्रश्न अभी भी जीवन्त हैं। उनकी रचनाएँ युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरित करने में सक्षम हैं। कुरुक्षेत्र में युद्ध और शांति का द्वंद्व आज के वैश्विक परिदृश्य में भी प्रासंगिक है, जहाँ नैतिक दुविधाएँ और सामाजिक मूल्य लगातार टकराते हैं। दिनकर का काव्य हमें यह सिखाता है कि इतिहास और पुराण केवल अतीत की कहानियाँ नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य को आकार देने का मार्गदर्शन हैं। उनकी रचनाएँ हमें यह याद दिलाती हैं कि साहस, एकता और नैतिकता के बिना कोई समाज प्रगति नहीं कर सकता। इस तरह, दिनकर का काव्य समकालीन समाज के लिए एक प्रेरणादायक और कालजयी संदेश है।

### **निष्कर्ष**

रामधारी सिंह “दिनकर” का काव्य हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसमें इतिहास, पुराण और पौराणिक प्रतीकों का उपयोग उनकी रचनाओं को गहराई, और कालजयी स्वरूप प्रदान करता है। दिनकर ने इतिहास को केवल अतीत की घटनाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मानव मूल्यों, संघर्ष और नैतिकता के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कृतियाँ, जैसे कुरुक्षेत्र और रश्मिस्थी, महाभारत के प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में जीवन्त करती हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम और

सामाजिक जागृति के लिए प्रेरणा बनीं। पौराणिक प्रतीकों जैसे सूर्य, अग्नि, गंगा और हिमालय का उपयोग उनकी कविताओं को भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ता है, साथ ही राष्ट्रीय गौरव और आत्मबल को प्रज्वलित करता है। कर्ण और अर्जुन जैसे पात्रों के माध्यम से उन्होंने मानवीय भावनाओं और नैतिक द्वंद्व को उजागर किया, जो सामाजिक असमानता और व्यक्तिगत बलिदान जैसे मुद्दों को आज भी प्रासंगिक बनाता है।

दिनकर का काव्य समकालीन भारत के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता और नैतिकता के प्रश्नों को संबोधित करता है। उनकी रचनाएँ हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने के साथ-साथ आधुनिक चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती हैं। दिनकर ने इतिहास और पुराणों को केवल साहित्यिक सौंदर्य तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का साधन बनाया। उनका काव्य हमें यह सिखाता है कि अतीत की गाथाएँ वर्तमान को दिशा दे सकती हैं और भविष्य को प्रेरित कर सकती हैं। इस तरह, दिनकर का साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य में एक युगद्रष्टा कवि के रूप में स्थापित है, जो अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को प्रबुद्ध और प्रेरित करता रहेगा।

### संदर्भ सूची :-

1. शर्मा, हरिशंकर, 2005, भारतीय लोक संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 56।
2. मिश्रा, रामचंद्र, 2010, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 123-130।
3. त्रिपाठी, शिवनाथ, 2008, दिनकर की काव्य यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 78-85।
4. पांडे, रमेश, 2012, भारतीय काव्य में पौराणिकता, साहित्य भवन, नई दिल्ली, पृ. 45-52।
5. सिंह, रामधारी, 1995, रश्मिर्थीरू एक समीक्षा, राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृ. 22-30।
6. वर्मा, सुधाकर, 2007, दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, पृ. 67-74।
7. गुप्ता, अनिल, 2015, हिंदी काव्य और सांस्कृतिक चेतना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 89-95।
8. यादव, रमेश चंद्र, 2009, कुरुक्षेत्ररू दार्शनिक दृष्टिकोण, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, पृ. 34-40।
9. शर्मा, लक्ष्मीनारायण, 2011, पौराणिक प्रतीकों का साहित्यिक महत्व, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 101-108।
10. जैन, मधु, 2013, दिनकर की कविताओं में इतिहास और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 55-62।
11. मिश्रा, विजय, 2006, हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 88-94।
12. तिवारी, विश्वनाथ, 2014, भारतीय साहित्य और पुराण, साहित्य भवन, आगरा, पृ. 72-80।
13. राय, गोपाल, 2008, दिनकररू एक युगद्रष्टा कवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 19-25।
14. शर्मा, प्रभाकर, 2010, हिंदी साहित्य में पौराणिक प्रतीक, ग्रंथ अकादेमी, जयपुर, पृ. 47-53।
15. सिंह, हरि, 2016, दिनकर के काव्य में सामाजिक चेतना, साहित्य संग्रह, दिल्ली, पृ. 66-73।